[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3609

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

विशेष बालकों की कला में रंग संयोजनः– एक अध्ययन (मूक–बधिर बालकों के विषेष सन्दर्भ में)

योगेन्द्र सिंह नरूका फूलैता
विभागाध्यक्ष एवं व्याख्याता
चित्रकला विभागए राज.से.आ.ला.पो.मूक बधिर संस्थान, जयपुर (राजस्थान)

विषेष बालकों (मानसिक,विकलांग,मूक–बधिर,अंध) से कला सृजनकार्य करवाना अपने आप में एक चुनौती पूर्ण कार्य है। उनमें रंगों की समझ पैदा करना, उनके सार्थक उपयोग को समझाना और फिर उसे सृजनात्मकता की ओर अग्रसर करना श्रम साध्य कार्य है। विषेष बालकों के रंग संयोजन को समझने के लिए सर्वप्रथम उन्हें रंग, कैनवास और ब्रष के साथ कुछ चित्रित करने के लिए अकेले छोड़ देना चाहिए। कुछ समय बाद उनके रंग–संयोजन को दृष्टिगत करना चाहिए।

रंगों से विषेष बालकों की मानसिक भावनाओं और संवेगों को समझा जा सकता है। पीले व बैंगनी रंग का अधिक उपयोग करने वाले बालकों में प्रफुल्लता और खुषी के भाव देखे जा सकते है वहीं लाल रंग का अधिक प्रयोग करने वाले बालकों में उग्रता व क्रोध के लक्षण दिखाई देते है। हरे रंग का प्रयोग करने वाले बालक प्रसन्नता और निष्चिंता लिए होते है। इसी तरह नीले रंग का अधिक प्रयोग करने वाले बालक शान्त व स्थिर प्रकृति के होते है।

मनोविष्लेषकों और वैज्ञानिकों ने अपने अनेक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है कि रंगों का विषेष बालकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। रंगों में वह शक्ति है जो इन्हें भावनात्मक व मानसिक रूप सें मजबूत बनाती है। खेल–खेल में रंगों के प्रयोगो द्वारा विषेष बालकों के समीप आया जा सकता है तथा इनसे मित्रता की जा सकती है।

रंगों के बेहतर संयोजन से हम इनके संवेगात्मक स्तर को सुधार सकते है। रंगों के प्रयोग से हम इन्हे प्रसन्न भी कर सकते है और उदास भी। यदि हम आँखों को चुभने वाले या बुझे रंगों का बार–बार उपयोग इन बालकों के बीच करते रहेगें तो यह बच्चे जल्दी ही ऊब जायेगे। रंगों का अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। एक ही रंग भिन्न–भिन्न रूपों में भिन्न–भिन्न प्रभाव उत्पन्न करता है। जैसे–यदि लाल रंग में गुलाब का चित्रण किया जाये तो वो प्रेम का प्रतीक बन जाता है और यदि उसी लाल रंग को किसी युद्ध के दृष्य में घायल सैनिकों के शरीर में से निकलते हुए रक्त के रूप में बना दिया जाये तो वो घृणा व विभत्सना भी पैदा करता है। रंग एक ही है लेकिन उसका उपयोग कहाँ किस रूप में होता है यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। अक्सर बालकों को दृष्यगत रंगयोजना समझाते समय कला–षिक्षक उन्हे यह सीखाता है कि पेड की पत्तियों का रंग हरा होना चाहिए, पानी का रंग नीला होना चाहिए व फूल पीला या लाल रंग का होना चाहिए लेकिन विषेष बालकों पर रंग योजना थोपी नही जानी चाहिए। उन्हे उनके मन से कार्य करने देना चाहिए। आप पायेगें कि उनकी रंगयोजना की कल्पना कैसी है? उनके बनाये चित्रों में आसमान का रंग लाल हो सकता है, पानी हरा हो सकता है तथा–पेड़ पत्तियों का रंग नीला हों सकता है।

विषेश बालकों की कल्पनाषक्ति भी विषेश प्रकार की होती है। इसी कारण उनका रंग संयोजन भी अद्वितीय रहता है। वो रंगों के सन्तुलन–असन्तुलन के बीच कैनवास पर ऐसा कुछ सृजन करने की क्षमता रखते है जो आज की आधुनिक कला का चलन है। विषेश बालको की कलाकृतियों में देखते ही सम्मोहित करने की कला होती हैं। जो ईष्वरीय उपहार के रूप में इन्हे प्राप्त होती है।

विषेश बालकों की रंगों के प्रति समझ भी अद्भूत होती है तथा उनके चाक्षुश प्रभाव भी मन मोहने वाले होते है। कभी–कभी विषेश बालक अपनी कलाकृतियों में रंगों को सांकेतिक रूप में भी प्रस्तुत करता है। जैसे–यदि कोई व्यक्ति उससे बुरा व्यवहार करता है तो वो उसका चित्र काले या मटमैले रंग से चिढ़ाने वाली स्थिति में बनायेगा तथा जिससे वो बहुत प्यार करता है उसका चित्र वो बड़े ही आकर्शक ढ़ग से बनायेगा। विषेश बच्चा(मानसिक विकलांग) कभी हुबहू व्यक्ति चित्रण नही करता वो सिर्फ चित्रकार वान गो की तरह उसके व्यक्तित्व का चित्रण करता है।

विषेश बालक रंगों को लेकर हमेषा प्रयोगात्मक स्थिति में रहते है तथा उनके चित्रण की विधि भी अपने आप में कौतूहल पैदा करने वाली होती है। इन बालकों की कला से अक्सर मॉर्डन आर्ट में कार्य करने वाले कलाकार प्रेरणा लेते रहते है तथा इनकी कला उन कलाकारों के लिए भी प्रेरणादायक है जो हर समय सृजनात्मक रूप की तलाष में रहते है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मूक–बधिर बालकों के विषेश संन्दर्भ में–

मूक–बाधिर बालक सामान्य बालकों की तरह समझ रखते है। इनके बीच संवाद सेतु हेतु सांकेतिक भाशा का ज्ञान आवष्यक हैं यदि आप हाव–भाव, हाथ व आँखों के संकेतो को जानते है तथा उनके द्वारा अपनी बात व्यक्त कर सकते है तो यह बालक आपके विचार समझ जाते हैं। मूक–बधिर बालक सामान्य बालकों की तरह समझ रखते है। बधिर बालक किसी भी चित्र की हुबहू नकल कर सकने में सक्षम होते है तथा उसके समान ही रंग संयोजित कर सकते है। ऐसे बालकों को कला सामग्रीयों का परिचय तथा कला के विभिन्न माध्यमों के प्रयोग का तकनीकी ज्ञान आवष्यक होता है। सामान्य बालकों की तरह दिया गया प्रषिक्षण इनके लिए पर्याप्त होता है लेकिन इन्हें समझाने का माध्यम सांकेतिक भाशा होती है। इन बच्चों में नकल की भावना विकसित न हों इसलिए कला षिक्षक के लिए आवष्यक है कि वो ऐसे बालकों को मौलिक सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करे। उनसें किसी विशय पर चित्र बनाने से पहले विशय की पूर्ण समझ उनमें पैदा करना आवष्यक है। यदि ऐसा नही किया और बिना विशय समझाये आपने उस पर आधारित कोई एक चित्र उदाहरणस्वरूप बनाकर दिखा दिया तो बालक भी उसी चित्र को बना देगा। ऐसा करना तब ज्यादा नुकसानदायक हो जाता है जब यह बालक किसी विशय आधारित प्रतियोगिता में जाते है तब सभी के एक जैसे चित्र बनने की सम्भावना अधिक हो जाती है। ऐसे में कलषिक्षक को चाहिए की उनमें सबसे पहले विशय के प्रति गहन समझ विकसित करे फिर कोइ उदाहरणस्वरू चित्र बना कर बताये।

उदाहरणः– यदि आप मूक–बधिर बालकों को जलसंरक्षण पर कोई चित्र बना कर बता रहे तो आमतौर पर बालक उसी चित्र की नकल करने की कोषिष करता है। जल संरक्षण विशय पर बालक आप के द्वारा बनाये गये चित्र के अलावा भी चित्र बनाये। इसके लिए पहले उसमें विशय के प्रति पूर्ण समझ विकसित करनी होगी। उसके बाद उसकी सृजनात्मक क्षमता को चुनौती देना होगा तब जाकर उसमें सृजनात्मकता के प्रति लगाव पैदा होगा। मूक–बधिर बालकों की सृजनात्मक क्षमता तथा रंगों के प्रति समझ आयु वर्ग के साथ परिपक्व होती जाती है।

सन्दर्भः–

1 *गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द्र : रूपप्रद कला के मूलाधार; अनन्त पब्लिकेषन, जयपुर; वर्श 2000*
2 *पाठक, डॉ. कृश्णाकान्त : षिक्षा और चिन्तन; माध्यमिक षिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर; वर्श 2014*
3 *Shanker, Dr.Hari: Indian Art Through The Ages; Rajasthan School of Art, Jaipur; year 2014*